Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-7| July-2026

Original Article

दिगम्बराचार्य विशुद्धसागर महाराज रचित 'वस्तुत्व 'महाकाव्य' का अनुशीलन

कु. अंजना अण्णासाहेब चौगुले
शोध छात्रा, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

Manuscript ID:
JRD -2026-180722
ISSN: 2230-9578
Volume 18
Issue 7
Pp. 112-114
July- 2026
Submitted: 15 June. 2026
Revised: 25 June. 2026
Accepted: 10 July. 2026
Published: 31 July. 2026

शोध सारांश

आधुनिक काल के इस आपा-धापी में प्रत्येक मनुष्य मन की शांति एवं सुख की कामना कर रहा है। परंतु अफसोस यह है कि चाह कर भी मनुष्य को मन शांति नहीं मिल रही है। अपने कार्य की व्यस्तता के कारण तथा अज्ञानता वश शांति से दूर होता जा रहा है इंसान। सुकून, प्रसन्नता, खुशी और सुख सभी की परिभाषा अलग-अलग है। मन की शांति, जीवन में सुकून और जीवन की सार्थकता को पाना है, तो हमें गुरु ने दिखाये गये राह पर चलना चाहिए। गुरु और गुरु द्वारा-लिखी गयी कृतियाँ ही हमें सही राह दिखा सकते है। दिगम्बराचार्य विशुद्ध-सागर महाराज जी के 'वस्तुत्व' महाकाव्य को पढने के बाद हम भलीभांति समझ जायेंगे, ऐसे कठिन समय में दिगम्बराचार्य, विशुद्धसागर महाराज जी के महाकाव्य की प्रत्येक मानवको अत्यंत आवश्यकता है। यहाँ पर यह बताना भी बहुत आवश्यक है कि, यह ग्रंथ सिर्फ जैन संपद्राय के लिए ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व के कल्याण के लिए है, जैन धर्म, धर्म ही नहीं है बल्कि यह तो जीवन जीने की कला सिखलाता है। महाकाव्य कई सर्गो में स्वर्ग - नरक का वर्णन मिलता है। असीम सुख प्राप्त करना है यह मानव जन्म बहुत महत्त्वपूर्ण है। क्योंकि मनुष्य को भगवान ने दिल और दिमाग दिया है इसलिए मनुष्य प्राणी, ही सही गलत की पहचान कर सकता है, अच्छा क्या, बुरा क्या यह अच्छी तरह समझ सकता है। मनुष्य जन्म में ही हम श्रावक धर्म निभाकर मोक्ष मार्ग पर आगे बढ सकते है। 'वस्तुत्व' महाकाव्य अन्य महाकाव्य से पूर्णतः अलग है। महाकाव्य का नायक राजा तथा समाज का आदर्श व्यक्ति होता है लेकिन 'वस्तुत्व' महाकाव्य का नायक 'आत्मा'" है। इससे बढ़कर कोई नायक हो ही नहीं सकता. आत्मा को परमात्मा में परिवर्तित होने के लिए प्रतिनायक (खलनायक) पुद्गल जड़ अचेतन पर संस्कार कर आत्मा को परमात्मा परिवर्तित कर सकते है। इसी के माध्यम से 'वस्तुत्व' महाकाव्य का कथात्मक व्याख्यान किया है। इसी कारण आधुनिक काल में यह महाकाव्य –मनुष्य जीवन में प्रेरणा तो देता ही है साथ ही "जीवन की सार्थकता " को स्पष्ट करता है।

बीज शब्द :- *आगम, चेतन, अचेतन, पुदगल, आत्मा, परमात्मा, कर्म, निर्जरा, सार्थकता, मोक्ष, प्रकृति।*

प्रस्तावना

मनुष्य का अस्तित्व जानने का अवसर हमें गुरु ने `वस्तुत्व महाकाव्य` से दिया है दार्शनिक दृष्टि से देखा जाए तो "वस्तुत्व-महाकाव्य " अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। काव्यगत तथ्य बहुत ऊँचा है, जो महाकाव्य का दयोतक है। वस्तुत्व - महाकाव्य नीति-परक सूक्तियों का विशाल कोश है। किसी भी ग्रंथ का लेखन अपने-आप में श्रम- साध्य कार्य होता है। शिशु को जन्म देने का महत्त्व जननी माँ, एक देवालय निर्माण का परिश्रम श्रमिक और एक शिष्य को शिक्षा-दीक्षा का परिश्रम गुरु ही जानते हैं, वैसे ही किसी श्रेष्ठ काव्य, कृति सृजन का श्रम श्रेष्ठ साहित्यकार ही जान सकते सकते है। वस्तुत्वकार दिगम्बराचार्य होते हुए भी साम्प्रदायिक हटवाद, तथा मुक्त समन्वय वादी व्यक्तित्व के धनी है। वह स्वयं कहते है सबसे मिलो, पर स्व-सिद्धांतो पर जीवन जियो। अपने महाकाव्य के माध्यम से शास्त्रानुकूल सिद्धांतों के साथ जन - कल्याणार्थ नूतन, मौलिक भावनाओं का सरल प्रस्तुतिकरण किया है, जो हृदय झंकृत करनेवाला है।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
अंजना अण्णासाहेब चौगुले शोध छात्रा शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

How to cite this article:
चौगुले, अंजना. अण्णासाहेब. (2026). दिगम्बराचार्य विशुद्धसागर महाराज रचित 'वस्तुत्व 'महाकाव्य' का अनुशीलन. Journal of Research and Development, 18(7), 112–114.
https://doi.org/10.5281/zenodo.21942503

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.21942503
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-7| July-2026

महाकाव्य के लक्षणों के अनुसार महाकाव्य की शुरुआत मंगलाचरण से होनी चाहिए 'वस्तुत्व' महाकाव्य की शुरुआत भी मंगलाचरण से ही की गयी है। इतना ही नहीं प्रारंभ में तो मंगलाचरण किया ही है, अनुठापन यह है कि, उन्होंने खण्ड-खण्ड में अनेक काव्यों में अपने इष्ट परमात्मा एवं धरती के देवताओं को श्रद्धा-सिक्त होकर स्मरण किया है।

विषय प्रवेश:-

'वस्तुत्व' महाकाव्य बारह सर्गो (खंड) में विभक्त है। इसका मुख्य नायक चेतन है (आत्मा है) यह महाकाव्य पूर्ण नाटक पद्धति में सृजित है। इस काव्य में चेतन (आत्मा) को नायक बनाकर काव्यकार ने नवीनता का सूत्रपात किया है। संसार रूप रंगमंच पर चेतन आत्मा नट बनकर विविध लीलाएँ किया करता है। (नट- रस्सी पर चलनेवाला कलाकार, बाजीगर) नायक चेतन (आत्मा) है और प्रतिनायक या खलनायक पुद्गल (शरीर) जड अचेतन है। इसी के माध्यम से वस्तुत्व - महाकाव्य में वस्तुत्व कथात्मक, व्याख्यान किया है। जिस प्रकार नदी की एक ही धारा में नाना स्त्रोतों का जल आकर मिलता है। जिस स्थान पर पाषाण शिलाएँ रहती है, वहाँ पानी की धारा झाग देती हुई आगे बढ़ती है। जहाँ हवा का जोर पड़ता है, वहाँ चंचल तरंगे उठती है और जहाँ की भूमि नीची होती है वहाँ भँभरें उठती हैं, इसी प्रकार आत्मा में पुद्गल अचेतन से अनेक प्रकार के मोह का निर्माण करता है। आत्मा (चेतन) की लीलाएँ नाटक के पात्रों की लीलाओं से कम नहीं। इसी चेतन (आत्मा) (वस्तु) को महाकाव्य के रूप में व्याख्यायित करना काव्य- कौशल की कला है। जो दिगम्बराचार्य विशुद्धसागर, महाराज जी ने इस अद्भुत कला का सृजन किया है।

'वस्तुत्व - महाकाव्य' में चेतन- अचेतन के माध्यम से वस्तुत्व का व्याख्यान मानो सम्पूर्ण जीवन का ही चित्रण है। इस महाकाव्य में सर्वत्र गुरुओं, ऋषि, मुनि तथा गुणियों की प्रशंसा है। प्रकृति चित्रण का कदम-कदम पर अनोखा, अद्भुत चित्रण है। महाकाव्योचित संयोग-वियोग, तंत्र-मंत्र, औषधादि विविध प्रकार के चित्रण किए गए हैं। काव्य की भाषा मधुर और प्रौढ़ है। "वस्तुत्व - महाकाव्य " के रचयिता ने छंदों के बंधन में न बँधकर चिंत्यनीय तथ्यों को जन-जन- में प्रिय बनाने के लिए सामान्य, सरल, सुबोध भाषा में तुकान्त, अनुकान्त छन्द पद्धति में सृजित किया है। जिसे केंचुआ छंद भी कहते हैं। कहीं-कहीं पर दोहा सोरठा आदि का प्रयोग किया है। महाकाव्य का नामकरण विषय-वस्तु (वस्तुत्व) के आधार पर निर्धारित किया गया है। महाकाव्य में रस व अलंकार का सर्वत्र उचित प्रयोग किया गया है।

1. 'वस्तुत्व' महाकाव्य में रचनाकार मंगल भावना में अनुप्रास, अलंकार युक्त अपनी आंतरिक भावना व्यक्त करते हुए लिखते है कि –

"नयन मनोहर
चारु चन्द्र के
चरणन शीश झुकाते है;
चंद्रनाथ चन्द्र - बुध्दि प्रदाता
पूर्ण-चन्द्र चारित्र दो...") (मंगल भावना वस्तुत्व पृ.क्र 51)

गंभीर अध्ययन, चिंतन-मनन से जो हम पाते है वह उच्च कोटी अर्हता होती है। महाकाव्यों की श्रृंखला में यह अद्वितीय काव्य कृति है। यह सैंकडो शास्त्रों का संक्षिप्त सार है। गागर में सागर है। वस्तुत्व महाकाव्य में शब्दों की प्रौढ़ता है अर्थ की नवीनता है, भावों की सुंदर अभिव्यक्ति, चिंतन की उत्तुंगता है, दर्शन की गहराई है, वस्तु के वस्तुत्व. का सजीव विश्लेषण है। विशुद्ध तत्व मीमांसा है। आध्यात्मिक उच्चता है। गुरुओं स्तुति है प्रकृति का चित्रण है। स्वाध्याय रसिकों के लिए यह परम उपादेय है। वक्ता, की प्रमाणिकता से ही वचनों की प्रामाणिकता होती है। वैसे ही काव्यकार की प्रामाणिकता से ही काव्य की प्रामाणिकता होती है। रस काव्य की आत्मा है। शांत - रसाधिराज है। महाकाव्य में शांत रस की प्रमुखता है। महाकाव्यों में शांतरस, को मुख्य रस के रूप में प्रतिष्ठित करना जैन कवियों की प्रशंसनीय उपलब्धि है। अध्यात्म विद्या के सिद्धहस्त, संयम धर, गुरु आचार्य भगवन् विशुद्धसागर जी द्वारा रचित 'वस्तुत्व महाकाव्य' रसपूर्ण कृति है।

2. महाकाव्य में 'विश्वबंधुत्व' की भावना उजागर करते हुये विश्व विनाशक 'क्रोध' को शांत करने का उपाय सुझाने हुए आचार्य श्री कहते हैं.

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-7| July-2026

"मैत्री भाव की दृढ़ता- दाता
शत्रु भाव नशांता
विश्व बंधुत्व सिखाता
कालुष्य भाव मिटाता
स्व-पर हिंसा से बचाता
क्रोध-ज्वाला को बुझता
शांति का परम प्याला
अमृत रसवाला
शीतल नीर
क्षमा धर्म" (वस्तुत्व महाकाव्य प्रथम खण्ड पृ.क्र. 60)

सामाजिक उपादेयता:-

वस्तुत्व महाकाव्य की सामाजिक उपादेयता बहुत गहरी है। यह केवल आध्यात्मिक ग्रंथ नहीं है, बल्कि समाज को शांतिपूर्ण, स्वस्थ, संतुलित बनाने हेतु सक्षम तत्वों से भरा महाकाव्य है। वर्तमान समय में समाज में वैचारिक मतभेद, तनाव की स्थिति, स्वार्थीप्रवृत्ति दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। ऐसे यह महाकाव्य दिशादर्शक का काम करता है। सबसे महत्त्वपूर्ण तत्व है, वह-अनेकांतवाद। इस महाकाव्य में दिया गया अनेकांतवाद समाज को यह सिखाता है कि हर व्यक्ति का दृष्टिकोण किसी-न-किसी, अपेक्षा से उचित ही है। यह सिद्धांत दुसरों के विचारों के प्रति सम्मान और उदारता सिखलाता है। आधुनिक चकाचौंध में लोग नैतिक मूल्यों को भूलते जा रहे है, वस्तुत्व महाकाव्य ने जीव को उसके मूल स्वभाव (ईमानदारी, दया, संतोष, आत्मीयता, यथार्थता की याद दिलाता है! नैतिक मूल्य का जतन करणे से सामाजिक शोषण रुक सकता है। आज समाज प्रकृति का दोहन (ऱ्हास) तथा प्रदुषण समस्या बढ़ रही है ऐसे में यह, महाकाव्य समाज अपरिग्रह तथा पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनने की प्रेरणा देता है । यह महाकाव्य व्यक्ति को आत्मपरीक्षण करने की सीख देता है। जब व्यक्ति को समझ में आता है की, बाहरी परिस्थितियाँ उसके नियंत्रण मे नहीं है तो वह व्यर्थ चिंता छोड़कर शांतिपूर्ण जीवन बिताता है। 'वस्तुत्व' का अर्थ ही है अपनी सीमाओं और क्षमताओं को जानना। यह महाकाव्य मनुष्य को उसके अधिकार के साथ कर्तव्य का भी अहसास दिलाता है। इससे व्यक्ति स्व:पर कल्याण के लिए प्रेरित होता है। अर्थात "जिओ और जीने दो " का पथ दर्शाता है।

यह मेरा परम सौभाग्य है कि, दिगम्बराचार्य विशुद्धसागर महाराज जी द्वारा रचित 'वस्तुत्व' महाकाव्य की, महत्ता को शोधालेख के द्वारा आप तक तक पहुंचाने का प्रयास कर रही हूँ यह मेरी भावना है कि गुरु पोर्णिमा के शुभ अवसरपर मेरे गुरुदेव के प्रति श्रद्धा, आदर, सम्मान प्रकट करने का अवसर इस आलेख से मुझे मिला है। मैं बहुत अल्पज्ञानी हूँ अतः मेरे द्वारा किये गए प्रयास में यदि कोई, त्रुटियाँ / गलतियाँ हो तो गुरुदेव मुझे अल्पज्ञानी को क्षमा करें एवं पाठक गण मुझे मेरी गलतियाँ बता कर उन्हें सुधारने का मौका दें।

मेरे गुरुदेव दिगम्बराचार्य विशुद्धसागर
महाराज जी के चरणों में त्रिवार वंदन!

संदर्भ-

1. विशुद्ध दिगम्बराचार्य विशुद्धसागर महाराज 'वस्तुत्व' महाकाव्य जैन संस्कृति संरक्षक संघ' जीवराज' भवन, बुधवार पेठ सोलापुर-413002
2. श्रमण सुव्रतसागर महाराज 'प्रत्यगू आत्मदर्शी' श्रमण संस्कृति केंद्र श्री नन्दीश्वर जिनालय, जैन नगर, लाल घाटी-भोपाल
3. श्रमण सुव्रतसागर महाराज "वस्तुत्व में महाकाव्यत्व " भगवती प्रेस' झुमरी तिलैया।